राजस्थान राज्य दिवस पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 30 मार्च 2024, शनिवार	**समय : 5.30 PM**	**स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र**

- मंचासीन महानुभावों तथा
- उपस्थित देवियों और सज्जनों !

नमस्कार,

आज राजस्थान का 75वां स्थापना दिवस है।

इस शुभ अवसर पर, आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई और अनेकानेक शुभकामनाएँ।

आप यह निश्चय ही जानते हैं कि पिछले साल से "राजभवन, असम" देश के अलग-अलग राज्यों का "स्थापना दिवस" हर्षोल्लास के साथ मना रहा है। यह भारत सरकार की एक अभिनव पहल है। मैं समझता हूँ कि इस पहल से प्रदेशवासियों के बीच प्रेम, एकता और बंधुत्व की भावना निरंतर मज़बूत हो रही है।

मित्रों,

जब तक हम एक-दूसरे राज्य के गौरवशाली इतिहास और परम्पराओं के बारे में नहीं जानते या नहीं समझते, तब तक हमारे हृदय में कोई सकारात्मक अवधारणा नहीं बन पाती है। इसलिए यह पहल, आने वाले दिनों में मील का पत्थर साबित होने वाली है। देश के सभी नागरिकों को, खासकर युवा पीढ़ी को प्रत्येक राज्य की महत्ता को भलीभांति समझना चाहिए।

आज इस आयोजन के माध्यम से विशेष रूप से असम के लोगों को, राजस्थान के बारे में थोड़ा-बहुत जानने-समझने का सुअवसर मिला है।

इस पवित्र मौके पर, मैं असम में रह रहे राजस्थान के सभी भाई-बहनों सहित आज सभागार उपस्थित सभी लोगों का हृदय की गहराइयों से धन्यवाद व आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही असम को सम्पन्न, समृद्ध और खुशहाल बनाने में आपकी सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा भी करता हूँ।

मित्रों,

वीर किवदंतियां, रोमांटिक कहानियाँ, जीवंत संस्कृति, रेतीली मरुस्थलीय भूमि पर ऊंट पर बैठकर सवारी, जब ये सारी स्मृतियाँ मानस पटल पर आती हैं, तो एक ही नाम मन में आता है - म्हारों रंगीलों राजस्थान।

आप सब जानते हैं कि इतिहास में यह राजाओं की भूमि यानी राजपूताना के नाम से विख्यात था। आजादी के बाद इसे राजस्थान कहा जाने लगा। साहस, शौर्य, त्याग एवं बलिदान की गाथाएं राजस्थान के कण-कण में रची-बसी हैं। गौरवशाली इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से राजस्थान की विश्व में एक विशिष्ट पहचान है।

स्थापना से अब तक राजस्थान ने हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। वर्तमान में भी संपूर्ण देश के साथ-साथ राजस्थान के विकास की प्रक्रिया को लगातार गति देने का काम किया जा रहा है।

मित्रों,

मरुभूमि के प्रदेश राजस्थान से नदियों व हरियाली के प्रदेश असम में आकर मुझे एक अलग ही दुनिया का रंग देखने को मिला है। हालांकि असम और राजस्थान देश के दो छोरों पर बसे हैं तथा दोनों प्रदेशों के बीच लंबी दूरी है, फिर भी दोनों प्रांतों का सदियों से संपर्क रहा है।

जैसा कि मुझे पढ़ने को मिला है कि सोलहवीं सदी में मणिपुर के राजा के आग्रह पर विद्रोहियों के दमन के लिए राजपुताना के राजा मानसिंह अपनी सेना लेकर आये थे। उनमें से बहुत से सैनिक मणिपुर, असम और बंगाल में स्थायी रूप से बस गये थे।

असम के ग्वालपाड़ा जिले के श्री सूर्यपहाड़ पर 12वीं शताब्दी में पहाड़ की शिला पर खोदित जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ तथा भरत-बाहुबली की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं, जो प्रमाणित करती हैं कि पूर्वांचल में जैन धर्म का बारहवीं सदी में भी प्रचलन था।

असम के प्रात:स्मरणीय लेखक, गीतकार, नाटककार, प्रथम असमिया फिल्म के निर्माता, स्वतंत्रता-सेनानी रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अग्रवाला के पूर्वज नवरंगलाल अग्रवाला 1811 में असम के ग्वालपाड़ा में आकर बसे थे। उनके ही वंशज ज्योतिप्रसाद अग्रवाला ने न सिर्फ असमिया युवती से शादी की, अपितु पूरी तरह असम के जनजीवन में रच-बस गये थे।

उन्होंने असमिया भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति में जितना अवदान दिया है, उसका कोई सानी नहीं है। यही वजह है कि आज भी असमवासी हर वर्ष ज्योति प्रसाद अग्रवाल की जन्म जयंती तथा पुण्यतिथि पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर उन्हें स्मरण करते हैं।

इस अवसर पर मैं उन सभी पुण्यात्माओं का कोटि-कोटि नमन एवं वंदन करता हूँ, जिन्होंने भारत की गौरवशाली संस्कृति को जीवंत बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयत्न किया।

मेरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में भी असम और राजस्थान के बीच सामाजिक समरसता को बनाए रखने के साथ ही, यहाँ की आर्थिक प्रगति में राजस्थान के मेरे भाइयों का सहयोग और समर्थन मिलता रहेगा।

मित्रों,

आप सभी को मालूम है कि राजस्थान का गौरवशाली इतिहास रहा है। इंग्लैंड के विख्यात कवि किप्लिंग ने लिखा था, **'दुनिया में अगर कोई ऐसा स्थान है, जहां वीरों की हड्डियां मार्ग की धूल बनी हैं तो वह राजस्थान कहा जा सकता है।'**

वहां के वीर तो वीर, वीरांगनाएं भी अपनी माटी के लिए कुर्बानी देने में नहीं झिझकीं। शौर्य और साहस ही नहीं, बल्कि राजस्थान की धरती के सपूतों ने हर क्षेत्र में कमाल दिखाकर देश-दुनिया में राजस्थान के नाम को चांद-तारों सा चमका दिया। राजस्थान की धरती पर रणबांकुरों ने जन्म लिया है। यहां वीरांगनाओं ने भी अपने त्याग और बलिदान से मातृभूमि को सींचा है।

यहां धरती का वीर योद्धा कहे जाने वाले पृथ्वीराज चौहान ने जन्म लिया, जिन्होंने तराइन के प्रथम युद्ध में मोहम्मद ग़ोरी को पराजित किया। कहा जाता है कि ग़ोरी ने 18 बार पृथ्वीराज पर आक्रमण किया था, जिसमें 17 बार उसे पराजय का सामना करना पड़ा था।

जोधपुर के राजा जसवंत सिंह के 12 साल के पुत्र पृथ्वी ने तो हाथों से औरंगजेब के खूंखार भूखे जंगली शेर का जबड़ा फाड़ डाला था।

राणा सांगा ने सौ से भी ज्यादा युद्ध लड़कर साहस का परिचय दिया था।

पन्ना धाय के बलिदान के साथ बुलन्दा (पाली) के ठाकुर मोहकम सिंह की रानी बाघेली का बलिदान भी अमर है। जोधपुर के राजकुमार अजीत सिंह को औरंगजेब से बचाने के लिए वे उन्हें अपनी नवजात राजकुमारी की जगह छुपाकर लाई थीं।

मैं समझता हूँ कि राजस्थान का गौरवशाली इतिहास हमें बहुत कुछ सिखाता है। विशेष रूप से यह हमारी नई पीढ़ी को मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा देता है।

मित्रों,

राजस्थान शब्द का अर्थ है - राजाओं का स्थान। यहां गुर्जर, राजपूत, मौर्य, जाट आदि ने पहले राज किया था। ब्रिटिश शासकों द्वारा भारत को आज़ाद करने की घोषणा करने के बाद सत्ता-हस्तांतरण की कार्रवाई शुरू की।

राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया कुल सात चरणों में पूरी हुई। इसमें भारत सरकार के तत्कालीन देशी रियासत और तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल और उनके सचिव वी. पी. मेनन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इनकी सूझबूझ से ही राजस्थान के वर्तमान स्वरूप का निर्माण हो सका।

मित्रों,

स्थापत्य कला, मूर्ति कला, रंगाई-छपाई एवं कशीदाकारी आदि अनेक कलाओं के साथ यहाँ संगीत नृत्य, लोकगीत आदि की अनोखी छटा दिखाई देती हैं। वस्तुत: ये सभी विशेषताएं राजस्थान के रंगीलेपन की प्रतिमान हैं।

राजस्थान की धरती शौर्य गाथाओं, धार्मिक पर्वों, लोक आस्थाओं तथा सांस्कृतिक ऐतिहासिक परम्पराओं के कारण समृद्ध दिखाई देती है।

गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और विरासत वाली मरुधरा सर्वधर्म समभाव में भी अग्रणी है। अपनी उद्यमिता से राजस्थानी देश की प्रगति में अहम सहभागी हैं। राजस्थान स्थापना दिवस के इस पुनीत अवसर पर वंदनीय भूमि को नमन करते हुए वहां के लोगों समेत सभी देशवासियों के कल्याण की प्रार्थना करता हूँ।

आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद,

जय हिन्द !